IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

उच्चतर माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

नंदा रजक

शोधार्थी

स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सिरोंजा, सागर मध्यप्रदेश

सार: मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है। जन्म से बालक पशुवत आचरण करता रहता है। उसके व्यवहार में सौंदर्य लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है और सभ्यता के रथ को आगे बढ़ता है। शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का महत्वपूर्ण साधन है पर मानव जीवन तब श्रेष्ठ बनेगा जब मनुष्य मानसिक रूप से स्वस्थ होगा। मनुष्य को वातावरण का ध्यान रखना चाहिए। विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य के विकास में शिक्षा, तकनीकी, शिक्षक, विद्यालय के वातावरण एवम माता-पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय का वातावरण सही होगा तो शिक्षक, विद्यार्थी, आस पड़ोस के लोग स्वस्थ एवं शिक्षित होंगे। अरस्तू, कांट, हीगेल आदि वैज्ञानिकों ने विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व विद्यालय के वातावरण को महत्वपूर्ण माना है। विद्यालय वातावरण के अंतर्गत सभी प्रकार की व्यवस्थाएं आती हैं जो विद्यार्थियों के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जैसे विद्यालय भवन, मैदान, शिक्षक, छात्र-छात्राएं, साफ सफाई की व्यवस्था, पुस्तकालय, शौचालय, पीने के पानी की व्यवस्था आदि। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में विद्यालयों के वातावरण को सृजित करने का निर्णय लिया गया। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने के लिए हमको स्वच्छ भारत अभियान को अपनाना होगा। वर्तमान में केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण योजनाओं में से स्वच्छ भारत मिशन के तहत इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि कोई भी बीमार ना हो और इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने आस पड़ोस को स्वच्छ रखें। शिक्षा के इतिहास में एक समय था जबकि बच्चों की बुद्धि, रुचि और विद्यालय के वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य आदि स्थितियों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता था। लेकिन अब शिक्षा बाल केंद्रित हो गई है। इसमें बालक के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्मित किया जाता है। उसके मानसिक व विद्यालय के वातावरण के साथ ही पाठ्यक्रम निर्माण किया जाता है। प्रत्येक अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना वह कुशल शिक्षक की श्रेणी में नहीं आता है। अगर विद्यालय का वातावरण दूषित हुआ तो विद्यार्थी अनेक प्रकार की बीमारियों व मानसिक रोग से ग्रसित हो जाएंगे। इस आधार पर विद्यार्थियों को स्वस्थ रखने के लिए शिक्षा के साथ-साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का होना अत्यंत आवश्यक है।

कुंजी शब्द : प्रस्तावना, विशेषताएँ, उद्देश्य, परिकल्पना, चर, न्यादर्श, उपकरण, तथ्यों का वर्गीकरण

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

संदर्भ ग्रंथ :

1. बोहरा, सुनीता, उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवम बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, 2013

2. एस.के., प्रारंभिक स्तर पर शारीरिक एवं स्वास्थ्य, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, प्रथम संस्करण, 1999, पृष्ठ क्रमांक 30

3. अस्थाना, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 2013

4. तलवार तथा कुमार, प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक आकांक्षा के संदर्भ में अध्ययन, 2010

5. डॉ. अलका मित्तल, उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य संबंध का अध्ययन, 2010

6. सतीश कुमार, माध्यमिक स्तर के कक्षा में हाजिर तथा गैर हाजिर रहने वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा विद्यालय संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन, 2011

7. गोस्वामी एन. एस., गुजरात राज्य के माध्यमिक स्कूलों में स्वास्थ्य जागृति के कार्यों का अध्ययन, 1983

8. खीरावाला जी.जे. विद्यालयों के प्रकार तथा कक्षा कक्ष वातावरण के प्रति स्वस्थ रहना चाहिए और अभिवृत्ति का अध्ययन, 1995

9. मुलिस्तान के. रावल, विद्यालय वातावरण एवं विद्यालय के प्रकार के संबंध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन, 1965